

सितम्बर 2022

दादावाणी

Retail Price ₹ 15



अब आप पुरुष हुए इसलिए
आप पुरुषार्थ करो।
जितना आज्ञा पालन करोगे, अंदर
उतनी ही जागृति बढ़ती जाएगी,
पूर्णता आती जाएगी।
जागृति जहाँ तक पहुँची,
उतना आत्मा के नजदीक पहुँचे।
जितना नजदीक पहुँचे,
उतना ही अधिक उजाला,
उतना अधिक प्रकाश।



शिकागो : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 17 से 19 जुलाई 2022



टोरन्टो : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 20 से 25 जुलाई 2022



अडालज : कोर्डीनेटर शिविर : ता. 5 से 7 अगस्त 2022



वर्ष : 17 अंक : 11
अखंड क्रमांक : 203
सितम्बर 2022
पृष्ठ - 28

Editor : Dimple Mehta
© 2022

Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset

B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: अडालज,
जि.: गांधीनगर-382421.

फोन : 9328661166-77

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:

+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

5 साल

भारत : 650 रुपये
यू.एस.ए. : 60 डॉलर
यू.के. : 45 पाउन्ड

वार्षिक

भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 10 पाउन्ड

भारत में D.D./M.O.

'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

ज्ञानी कृपा से भीतर वाला जाग्रत

संपादकीय

कोटि जन्मों के पुण्य से ज्ञानी पुरुष दादा भगवान मिले और उनकी कृपा से अक्रम विज्ञान द्वारा ज्ञान मिलते ही 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसी प्रतीति-लक्ष-अनुभव होता है। शुद्धात्मा की प्रतीति अर्थात् दर्शन कि जो सौ प्रतिशत, लक्ष अर्थात् जागृति कि जो पंद्रह प्रतिशत, अनुभव अर्थात् ज्ञान कि जो दो प्रतिशत, सहज प्राप्त हो जाता है। मोक्ष की बाउन्ड्री में शुद्धात्मा की जागृति वह पहला उपनगर (शहर के मुख्य स्टेशन से पहले आने वाले उस शहर के छोटे-छोटे स्टेशन) है यानी कि बोरीवली जैसा उपनगर और जैसे-जैसे जागृति बढ़ेगी वैसे-वैसे आगे जाकर अंतिम स्टेशन बॉम्बे सेन्ट्रल यानी कि आत्मा के संपूर्ण अनुभव का स्टेशन आया। अक्रम में जागृति उत्पन्न होना, वह सब से बड़ा आश्चर्य है! जागृति उत्पन्न होने के लिए ही यह विज्ञान है।

प्रस्तुत अंक में, 'जागृति' के लिए प्राथमिक समझ दादाश्री की वाणी द्वारा एकत्रित हुई है, जैसे कि जागृति अर्थात् क्या; जागृति, लक्ष, भान, ख्याल, इनके बीच की भेदरेखा; जागृति कैसे उत्पन्न हुई; जागृति कैसे घटती-बढ़ती है; रोजमर्रा के जीवन में जागृति कैसे आती है; जागृति और प्रज्ञा की जुगल जोड़ी; जागृति, जुदापन, उपयोग, इनके बीच की भेदरेखा; जागृति और पुण्य का क्या संबंध है; जागृति अर्थात् पुरुषार्थ वगैरह।

जागृति कम कब होती है? जब कर्म के उदय भारी हो तब तथा अनुकूलता, टंडक, मिठास हो तब जागृति मंद हो जाती है। और जागृति कैसे बढ़ती है? प्रतिकूलता तथा कड़वाहट में जागृति बढ़ती है। अब, प्रत्यक्ष सत्संग में ज्ञानी का सानिध्य, दर्शन, आशीर्वाद, विधियाँ, सेवा और पाँच आज्ञा के पालन से जागृति खिलती जाती है। जागृति रहती है उसके एन्ड रिजल्ट (अंतिम परिणाम) में क्या है? जरा भी भोगवटा नहीं रहता, दुःख नहीं होता। जागृति अर्थात् अवेरनेस, जो चारों तरफ फैली हुई होती है। खुद के दोष देखने की दृष्टि, जुदापन (अलग रखना), सामने वाले को निर्दोष देखना, वही जागृति का स्वरूप है।

जागृति, वह इफेक्ट नहीं है, वह किसी पर डिपेन्डन्ट (आधारित) नहीं है, वह तो अपना स्वतंत्र पुरुषार्थ है! आज्ञा में रहने से जागृति बढ़ेगी और जैसे-जैसे जागृति बढ़ेगी वैसे-वैसे आज्ञा पालन अधिक हो पाएगा। महात्माओं को आज्ञा पालन के लिए जागृति रखनी है लेकिन कर्म उलझन में डालते हैं, इसलिए पुरुषार्थ कच्चा पड़ जाता है। पुण्य से ज्ञानी के सानिध्य के, सत्संग के, सेवा के संयोग मिलते हैं। लेकिन निश्चय करें कि मुझे अब जागृति में ही रहना है, वही पुरुषार्थ है।

अक्रम विज्ञान, वह जागृति का मार्ग है। जागृति बढ़ते-बढ़ते फिर शुद्ध उपयोग में आता है। उसके बाद आगे जाकर ज्ञाता-द्रष्टा पद आता है, यानी कि दीया बुझता ही नहीं। फिर उससे आगे पूर्ण अनुभव-स्पष्टवेदन तक पहुँचता है। अंत में, जब जागृति बढ़ते-बढ़ते फुल हो जाती है तब केवलज्ञान होता है! अब, सभी महात्मा पाँच आज्ञा को पूरी तरह से समझकर प्रेक्टिकल जीवन में उनका उपयोग करके जागृति का पुरुषार्थ शुरू करें, यही अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

ज्ञानी कृपा से भीतर वाला जाग्रत

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी ‘चंदूभाई’ नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नजर आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

देहाध्यास छूटते ही आत्म अनुभव

प्रश्नकर्ता : आत्मा का अनुभव हो जाने पर क्या होता है ?

दादाश्री : आत्मा का अनुभव हो गया तो देहाध्यास छूट गया। देहाध्यास छूट गया, यानी कर्म बंधना रुक गया। उसे संवर रहता है। फिर और क्या चाहिए ?

पहले चंदूलाल क्या थे और आज चंदूलाल क्या है, वह समझ में आता है। तो यह परिवर्तन कैसे ? आत्म-अनुभव से। पहले देहाध्यास का अनुभव था और यह आत्म-अनुभव है।

अनुभव, लक्ष (जागृति) और प्रतीति। प्रतीति, वह नींव है। उस नींव के डलने के बाद में फिर लक्ष उत्पन्न होता है, उसके बाद ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’, निरंतर ऐसा लक्ष रहा ही करता है।

प्रतीति अर्थात् पूरी मान्यता सौ प्रतिशत बदल गई और ‘मैं शुद्धात्मा ही हूँ’ वह बात पक्की हो गई और ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’ वह श्रद्धा बैठती है लेकिन फिर चली जाती है लेकिन प्रतीति नहीं जाती। श्रद्धा बदल जाती है, प्रतीति नहीं बदलती।

प्रतीति अर्थात् हम यदि लकड़ी को यहाँ गाड़ दें और उस पर बहुत दबाव आए तो वह इस तरह टेढ़ी हो जाएगी लेकिन स्थान नहीं छोड़ेगी। चाहे कितना भी कर्मों का उदय आए, खराब उदय आए, लेकिन (प्रतीति) स्थान नहीं छोड़ेगी। ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’ वह चला नहीं जाएगा।

फिर अनुभव, लक्ष और प्रतीति ये तीनों रहेंगे। प्रतीति सदा रहेगी। लक्ष तो कभी कभी रहेगा। कुछ धंधे में या किसी काम में लगे कि फिर से लक्ष चूक जाते हैं और काम खत्म होने पर फिर से लक्ष में आ जाते हैं। और अनुभव तो कब होता है कि जब काम से, सब से निवृत्त होकर एकांत में बैठे हुए हों। और कुछ देर के लिए ज्ञाता-द्रष्टा हुए तब अनुभव का स्वाद आता है। यद्यपि अनुभव तो बढ़ता ही रहता है।

हम जब ज्ञान देते हैं न, तब जो कर्म, स्वरूप के लिए अंतराय रूपी होते हैं, लक्ष के लिए अंतराय रूपी होते हैं, वे सभी भस्मीभूत हो जाते हैं। लक्ष के अंतराय टूट जाते हैं और उसे शुद्धात्मा का लक्ष बैठ जाता है। यह लक्ष एक प्रकार का अनुभव है।

अब प्रतीति तो रहती ही है लेकिन फिर जितनी जागृति हो उतना लक्ष रहता है। लेकिन फिर लक्ष कितना रहता है ? जागृति के अनुसार रहता है। वह उपादान के आधार पर है। वह लक्ष यानी क्या ? तो कहते हैं, ‘जब आप चेक लिखते हो उस क्षण लक्ष नहीं रहता। चाहे कुछ भी लिखने का काम करो, उस समय लक्ष नहीं रहता।’ तो भगवान उसे गुनहगार नहीं कहते हैं। लेकिन जब वह काम खत्म हो जाए, जब नो वर्क (काम न हो), उस समय लक्ष रहे, इज इट पॉसिबल (क्या यह संभव है) ?

प्रश्नकर्ता : हाँ, रहता है। यहाँ उपादान का अर्थ योग्यता है न ?

दादाश्री : हाँ। उपादान अर्थात् जितना-जितना इस मिथ्यात्व दशा में धारणा करते रहे हो और जो कुछ भी किया हो, वह मेहनत बेकार तो जाएगी नहीं। नुकसान भी पहुँचाती है और दूसरा फायदा भी करती है न! उपादान तो उत्पन्न होता है न! तो वही योग्यता है। किसी की योग्यता अधिक होती है तब लक्ष अधिक रहता है। यदि योग्यता कम हो तब भी प्रतीति तो जाती ही नहीं।

अहंकार ही है अनुभव करने वाला

प्रश्नकर्ता : आत्मानुभव किसे होता है? अनुभव करने वाला कौन है?

दादाश्री : 'खुद' को ही होता है। अज्ञान से यह जो भ्रांति हो गई थी, वह चली जाती है और अस्तित्वपना वापस ठिकाने पर आ जाता है। 'जिसे' ऐसा भान था कि 'मैं चंदूभाई हूँ', मैं उसका वह भान छुड़वा देता हूँ और उसे ही यह भान हो जाता है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ'। जो सूक्ष्मतम अहंकार है कि जिसका फोटो नहीं लिया जा सकता, जो आकाश जैसा है, उसे यह अनुभव होता है। अतः वह अहंकार ही अनुभव करने वाला है। उसके बाद वह अहंकार विलय हो जाता है और फिर 'प्रज्ञा' उत्पन्न होती है। 'अज्ञा' की सत्ता चली जाती है।

प्रश्नकर्ता : यानी कि इसमें जो अहंकार बेसुध था, वह अहंकार सभान हो गया?

दादाश्री : यह जो बेभानपन (मूर्च्छा, भ्रांति) था, वह सभानपन (जागृति) हो गया। जागृति उत्पन्न होने से वह प्रज्ञा उत्पन्न हुई और प्रज्ञा उत्पन्न होने से सभानता में आ गया, सबकुछ। अहंकार-वहंकार सब सभान हो गया। जबकि मन और वह सब सभान नहीं कहलाता। इन्द्रियाँ, मन सभान नहीं हो सकते। वे भान में होते ही नहीं हैं, कभी भी। इन्द्रियाँ सभान नहीं होती हैं, सभान

तो हम, जो बेभान हो गए थे। जो अहंकार बेभान था, वह सभान हो गया है।

संपूर्ण रूप से जाग्रत कब होता है? जब अहंकार का विलय हो जाए तब।

'मैं चंदूभाई हूँ', वह (जीवित) स्थूल अहंकार छूट गया, फिर सूक्ष्म, सूक्ष्मतर और अंत में सूक्ष्मतम अहंकार रहता है। सूक्ष्मतम अहंकार को अनुभव होता है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ'। जो आज तक उल्टा चला था, वह वापस पलटता है। 'इस' ज्ञान के बाद आपमें अब स्थूल अहंकार बचता है, कि जो निर्जिव है। सजीव भाग खिंच गया। स्थूल अहंकार का फोटो लिया जा सकता है। फिर बचता है सूक्ष्म, सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम अहंकार, कि जिसे अनुभव होता है।

प्रश्नकर्ता : अनुभव प्राप्त करने वाला और अनुभव को देखने वाला, ये दोनों अलग हैं या एक ही हैं?

दादाश्री : दोनों एक ही हैं। जिसने देखा वह एक और जिसने प्राप्ति की वह एक, दोनों एक ही हैं। अहंकार को यदि अनुभव नहीं हुआ होता तो वह कहता कि, 'मुझे अनुभव नहीं हुआ है' और अनुभव हो जाने पर वह प्रज्ञा को सत्ता सौंप देता है कि, 'यह आपकी गद्दी'। जिसने अनुभव प्राप्त किया और जिसने अनुभव को देखा, वे दोनों एक ही हैं! 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा भान होना चाहिए, उसे अनुभूति कहते हैं।

भेदविज्ञान से शुद्धात्मा की जागृति-भान

प्रश्नकर्ता : 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा समझ में आया है लेकिन उसका निरंतर भान नहीं रहता।

दादाश्री : भान क्या चीज़ है वह आपको समझाता हूँ। जैसे कि कोई व्यक्ति सिगरेट पी रहा हो, तब उसका बेटा उसमें इस तरह हाथ लगाने

जाता है। अब इस बच्चे का यह रोग कब जाएगा ? कोई सिगरेट पी रहा हो तब वह इस तरह उसे छूने की कोशिश कर रहा हो, तब फिर एक दिन यों उसका हाथ पकड़कर ज़रा सिगरेट छुआ देते हैं। तो वह खूब जल जाता है। इसके बाद जिंदगी भर वह इस अनुभव को नहीं भूलेगा। जलती हुई सिगरेट का ज़रा लाल-लाल दिखाई दिया कि भागेगा, लाल दिखाई दिया कि भागेगा, उसे कहते हैं अनुभव। उसी तरह से हमने आपको आत्मा का अनुभव करवा दिया है। तब जाकर आपको शुद्धात्मा रहता है, यों ही तो कभी रहता होगा ?

हम तो जलाए बगैर भी करवा देते हैं आत्मा का अनुभव। इस दुनिया में चीजों का अनुभव भी जलकर करना पड़ता है लेकिन यह आत्मा का अनुभव तो परमानंद है। इसमें जलना-करना नहीं है। हमारे साथ बैठते ही आनंद उत्पन्न होने लगता है। निरंतर शुद्धात्मा का भान रहता ही है, इससे ज़्यादा और क्या चाहिए ?

यह देह और आत्मा साथ रहते हैं फिर भी यह देह कभी भी चेतन नहीं होता और आत्मा जड़ नहीं होता। यानी कि आत्मा और देह दोनों साथ में रहने के बावजूद भी, आप कहो कि अब मुझ में तो पुद्गल (अहंकार) और ये सब हैं तो मेरा आत्मा कैसे अलग होगा ? लेकिन नहीं, आत्मा टंकोत्कीर्ण ही है।

अब, उस टंकोत्कीर्ण (स्वभाव) की वजह से आज हम आत्मा को अलग कर सकते हैं, वर्ना नहीं हो सकता। कितने ही काल से सब अंदर बिगड़ गया था, लेकिन टंकोत्कीर्ण स्वभाव की वजह से ज्ञानी पुरुष के पास ये भेदविज्ञान रहता है इसलिए वे डिमार्केशन लाइन डाल देते हैं कि यह आत्मा है और यह अनात्मा, वे अलग कर देते हैं तो अलग हो जाता है। यह ज्ञान ही

ऐसा है कि वह अलग हो जाता है तब उसके साथ ही इस ज्ञान से जो अग्नि उत्पन्न होती है, वह सभी पापों को भस्मीभूत कर देती है। और तभी जागृति आती है, वर्ना जागृति आती होगी क्या इन सभी को ?

प्रश्नकर्ता : यानी कि हमेशा इन सभी अवस्थाओं में मैं खुद अलग ही हूँ!

दादाश्री : सभी अलग हैं, लेकिन उसका भान होना चाहिए न! जब तक वह भान नहीं हो जाता तब तक व्यर्थ है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह भान हो जाना चाहिए। 'मैं अलग हूँ', ऐसा भान हो जाना चाहिए। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह भान हो गया तो 'अलग हूँ' उसका भान हो गया कहा जाएगा।

पहले से अंतिम स्टेशन तक की यात्रा

सब से पहले शुद्धात्मा, और जो परमात्मा है, वह खुद, रियल वस्तु है। वह स्टेशन अलग है और शुद्धात्मा का स्टेशन अलग है। शुद्धात्मा तो वस्तु स्वरूप का सब से पहला 'उपनगर' है। फिर ऐसे कितने ही 'उपनगर' आते हैं, उसके बाद फिर मुख्य स्टेशन आता है। जैसे-जैसे अनुभव बढ़ते जाएँगे न, वैसे-वैसे आगे के 'उपनगर' आते जाएँगे, स्टेशन बदलता जाएगा। आपको इस पहले स्टेशन पर उतार दिया है, मोक्ष की बाउन्ड्री में। शुद्धात्मा पहला स्टेशन है। वहाँ से सेन्ट्रल स्टेशन की ओर जाएँगे, तब जाकर अंतिम स्टेशन आएगा।

ज्ञानी पुरुष से आत्मज्ञान जो समझ में आ गया तो वहीं से उपनगर शुरू हो जाते हैं। बाकी, यदि साधु कहें 'शुद्धात्मा' तो कुछ नहीं होगा। अनंत जन्मों तक गाता रहे, फिर भी कुछ नहीं होगा। शुद्धात्मा का भान हो जाना चाहिए और 'मैं चंदूभाई हूँ' वह भान छूट जाना चाहिए। भान अर्थात् जागृति।

‘ज्ञानी कृपा’ से लक्ष-जागृति बरतते हैं

आप जैसे लोग आकर मुझसे कहते हैं कि, ‘शक्कर मीठी है, ऐसा हमें चखाइए।’ तब फिर मैं मुँह में रख देता हूँ कि ‘दिस इज़ देट (यह है वह)।’ तब से फिर वह निरंतर आत्मामय हो जाता है, फिर एक क्षण के लिए भी वह इधर-उधर नहीं होता। निरंतर आत्मामय, चौबीसों घंटे, संपूर्ण जागृति!

जागृति हुए बिना खुद का भान प्रकट नहीं होता है। संपूर्ण जागृति आए तो खुद का भान प्रकट होता है।

जागृति, वही ज्ञान है। ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’ यदि ऐसा रहा करे तो वह भाव नहीं है, लेकिन वह लक्ष-स्वरूप है; और लक्ष हुए बिना ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’ ऐसा रहेगा ही नहीं। ‘शुद्धात्मा’ का लक्ष बैठना वह तो बहुत बड़ी बात है! अति कठिन है! लक्ष मतलब जागृति और जागृति वही ज्ञान है।

प्रश्नकर्ता : वह जागृति कौन उत्पन्न करता है ?

दादाश्री : जागृति, जब हम ज्ञान देते हैं न, उसके बाद वह ज्ञान खुद ही करता है, फिर हमें नहीं करना पड़ता। दिनभर ज्ञान ही निरंतर काम करता रहता है। उन्हें भी कुछ नहीं करना पड़ता। वह ज्ञान ही करता रहता है।

अब, जागृति कब आती है ? कृष्ण भगवान ने क्या कहा है कि, ‘ज्ञानीपुरुष’ पापों को भस्मीभूत कर देते हैं और फिर निरंतर जागृति रहती है। निरंतर जाग्रत रहना, वही अंतिम दशा है। अर्थात् मूल वस्तु, जागृति की आवश्यकता है। आपकी जागृति कम है ?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा। सतत आत्मा का अनुभव होते रहना चाहिए।

दादाश्री : हाँ। सतत अर्थात् निरंतर, रात को भी नहीं भूलें। तभी जानना कि हमने कुछ प्राप्ति की है। वर्ना अन्य कुछ तो काम का ही नहीं है न!

भगवान की कृपा होते ही वह खुद जाग्रत हो जाता है। वह जागृति फिर जाती नहीं है, एकबार जागने के बाद वह जाती नहीं है। फिर निरंतर जाग्रत रह पाते हैं। यानी निरंतर प्रतीति रहेगी ही। प्रतीति कब रह सकती है ? जागृति हो तो प्रतीति रह सकती है। पहले जागृति, फिर प्रतीति।

आत्मा के ज्ञान से अनुभव तक...

प्रश्नकर्ता : प्रतीति अर्थात् क्या ?

दादाश्री : प्रतीति अर्थात् दर्शन।

प्रश्नकर्ता : दर्शन अर्थात् क्या ?

दादाश्री : दर्शन अर्थात् जो समझ में फिट हो गया है।

प्रश्नकर्ता : अगर इस प्रतीति को दर्शन कहेंगे तो लक्ष किसमें समाएगा ?

दादाश्री : प्रतीति का समावेश दर्शन में होता है। लक्ष का जागृति में। लक्ष अर्थात् जागृति। और जो प्रतीति हुई है वह अनुभव में आ जाए तो, उसी को ‘ज्ञान होना’ कहते हैं। ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’, वह दर्शन है, और जब उसका अनुभव होता है तो वह ज्ञान है।

प्रश्नकर्ता : हम ‘आत्मा का ज्ञान’ कहते हैं और फिर ‘आत्मा का अनुभव’ कहते हैं, तो आत्मा के अनुभव और आत्मा के ज्ञान में क्या अंतर है ?

दादाश्री : आत्मा का ज्ञान संपूर्ण कहलाता है और अंश-अंश करके अनुभव कहलाता है। अंश ज्ञान को अनुभव कहा गया है और सर्वांश ज्ञान

को ज्ञान कहा गया है। एक-एक अंश बढ़ते-बढ़ते संपूर्ण अनुभव हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : अभी जिन्हें आप ज्ञान देते हैं, उन लोगों को आत्मा का ज्ञान होता है या आत्मा का अनुभव भी होता है ?

दादाश्री : सभी को अनुभव ही होता है। यदि अनुभव नहीं है तो फिर आत्मा ही नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : क्या जागृति अनुभव का ही भाग है ?

दादाश्री : जागृति रहती ही है।

प्रश्नकर्ता : वही अनुभव है न ?

दादाश्री : नहीं। जागृति तो ऐसी चीज है कि जिससे हमें ये सारे दूसरे अनुभव होते हैं। एक तरफ लिखें कि पहले जो चंदूभाई थे, वे कैसे थे और दूसरा अभी के चंदूभाई कैसे हैं ? वह किस वजह से है ? तो वह इसलिए कि यह जो 'ज्ञान' मिला है, इसके प्रताप से, जागृति के प्रताप से। यह आत्मा की तरफ की दिशा जाग गई है, राइट दिशा में और इस रोंग दिशा में थे, वह पूरा ही चेन्ज हो जाता है। 100 परसेन्ट चेन्ज लगता है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, चेन्ज हो जाता है, ठीक है। लेकिन चेन्ज कब होता है, जागृति आने के बाद ही चेन्ज होता है न ?

दादाश्री : यह ज्ञान देने के बाद उसे जागृति आ ही जाती है।

प्रज्ञा और जागृति की जुगल जोड़ी

प्रश्नकर्ता : जो जागृति आई है, वह अहंकार को आई या आत्मा को ?

दादाश्री : वह तो, आत्मा को भी नहीं और अहंकार को भी नहीं। वह तो प्रज्ञा को। आत्मा तो

जाग्रत ही है निरंतर। यह तो, प्रज्ञा जो इसमें से निकली है, उसमें आई है, उसे यह प्राप्त हुई है।

प्रश्नकर्ता : प्रज्ञाशक्ति और जागृति में कोई फर्क है ?

दादाश्री : जागृति जब फुल (पूर्ण) हो जाती है न, अर्थात् प्योर होते-होते जब फुल हो जाती है, तब केवलज्ञान कहलाता है। फिर प्रज्ञाशक्ति खत्म हो जाती है। प्रज्ञाशक्ति हमें मोक्ष में जाने तक हेल्प करती है। आत्मा तो निरंतर केवलज्ञान ही है। उजाले को कुछ भी स्पर्श नहीं करता।

प्रश्नकर्ता : अब, मोक्ष में पहुँचने के बाद जागृति कोई काम करती है क्या ?

दादाश्री : नहीं, उसके बाद जागृति है ही नहीं। वहाँ पर तो प्रकाश ही! खुद ही है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् अंत तक जागृति और प्रज्ञाशक्ति रहती है ?

दादाश्री : हाँ, प्रज्ञाशक्ति और जागृति, दोनों साथ में चलते हैं। प्रज्ञाशक्ति उसे समझाती रहती है और जागृति उसे पकड़ लेती है।

अवेर, बिवेर, अलर्ट, एक्ज़ेक्टनेस

प्रश्नकर्ता : सामान्य रूप से जागृति किसे कहा जाता है ?

दादाश्री : दिन तो पूरा निकल जाता है। उसमें खाना, पीना, चाय-पानी वगैरह का हिसाब मिल आता है। पूरा दिन, जागृति नहीं होने से वह किसी न किसी में, किसी भी विषय में उलझा हुआ रहता है। आप जिसे जागृति समझते हो, वह जगत् संबंधी किसी एक विषय में पड़ा हो, उसे कहते हो। वह तो 'सब्जेक्ट' जागृति कहलाती है। जगत् के लोगों को तो विषय और लक्ष्मी में ही जागृति होती है। जब

कि यथार्थ जागृति तो हर एक जगह पर होती है, सर्वग्राही होती है।

प्रश्नकर्ता : (यह जागृति अर्थात्) वे चार शब्द, आपने एक बार बताए थे कि अवेर (सचेत), बिवेर (सावधान), अलर्ट (चौकन्ना) और एक्जेक्ट (यथार्थ)। वही है? इन्हें ज़रा समझाइए न!

दादाश्री : अवेरनेस, बिवेरनेस, अलर्टनेस और एक्जेक्टनेस, वे क्या हैं? अवेरनेस शब्द हमेशा ही, इन इन्द्रिय विषयों के लिए ही है। इन्द्रिय विषयों की जागृति के लिए अवेरनेस अप्रोप्रिएट (योग्य) शब्द है।

अवेरनेस शब्द जो है, वह फॉरेनर्स के लिए है। इन्डियन के लिए अवेरनेस की ज़रूरत नहीं है। अपने जो मज़दूर हैं वे भी बिवेर हो चुके हैं। क्या है? यानी कि फॉरेन के लोगों के लिए अवेरनेस की ज़रूरत है कि जो लोग इन्द्रियों में ही मस्त रहते हैं।

जो लोग विषयों में ही रहते हैं और दिनभर उनका चित्त खाने-पीने में और मक्खन और पाव में और उसी में रहता है। उनकी लेडियों (स्त्रियों) का चित्त भी उसी में रहता है और पुरुषों का चित्त भी उसी में रहता है। दिनभर विषय में ही रहते हैं, वे। कषाय तो उनमें होते ही नहीं। कषाय तो बहुत ही छोटे-छोटे होते हैं। क्रोध-मान-माया-लोभ वे कितने? इतने-इतने, जबकि हिन्दुस्तान के सौ फुट ऊँचे। उनके एक इंच ऊँचे और हिन्दुस्तान के लोगों के क्रोध-मान-माया-लोभ सौ फुट ऊँचे। बोलो! यानी उनमें अवेरनेस रहती है। उन्हें भान नहीं रहता, दिनभर...!

प्रश्नकर्ता : अवेरनेस यानी साक्षीरूप?

दादाश्री : हाँ, साक्षीरूप ही तो है। अर्थात् वह बहुत छोटी सी जागृति। अवेरनेस यानी क्या?

जो दिनभर विषयों में ही तन्मयाकार रहता है, उसे भान ही नहीं रहता, उसे ज़रा जागृति देने का एक साधन, यानी अवेर! समझ में आया भाई आपको?

अवेरनेस से ऊपर बिवेरनेस है, वह ऊपर के ग्रेड की जागृति। उससे ऊपर के ग्रेड की अलर्टनेस है। और उससे भी ऊपर के ग्रेड की एक्जेक्टनेस है। आपको कौन सी पसंद है?

प्रश्नकर्ता : सबसे ऊपर वाली। एक्जेक्टनेस।

दादाश्री : ऊपर, सबसे ऊपर वाली का आपको क्या करना है? अभी तो अवेरनेस को याद कर रहे थे।

प्रश्नकर्ता : हाँ, फिर बिवेरनेस यानी क्या?

दादाश्री : बिवेरनेस, वह फॉरेन में भी है और अपने यहाँ भी है। वह जो है वह तो इन्द्रियों से आगे की चेतना है।

प्रश्नकर्ता : इन्द्रियों से आगे की चेतना है।

दादाश्री : हाँ। यानी कि, अगर कोई पास आकर बैठ गया, चोर बैठा हो न, तो इशारे से ही समझ जाता है। बिवेर! वह बोर्ड पर लिखा होता है, 'बिवेर ऑफ थीवज़' (चोरों से सावधान)। यह बिवेर उसके वर्तन में आ जाता है।

प्रश्नकर्ता : यानी देखकर ही, हाँ।

दादाश्री : साथ में बैठा हो न, तो भनक लग जाती है कि यह जेब काटने वाला आया है, ऐसा समझ जाता है। इतनी जागृति होती है, यह। फिर अलर्ट किसे कहते हैं? अंदर सब अलर्ट होता है, बाहर अलर्टनेस होती है।

बिवेर अर्थात् हममें से कुछ लोग जब गाड़ी में बैठते हैं न, तभी बिवेर की तरह, वह जेब काँट लेगा तो क्या करेंगे, इस तरह से बिवेर ही

रहते हैं। और अलर्ट में तो, ये वकील हैं, डॉक्टर हैं, ये अपने-अपने व्यापार में अलर्ट हैं, संपूर्ण। संपूर्ण अलर्ट। और बाकी सभी कोने में घनघोर अँधेरा, जागृति ही नहीं है। कैसी? एक कोने में ही जागृति, उसे कहते हैं अलर्टनेस।

अलर्टनेस से आगे, अंतिम तो यह एक्ज़ेक्टनेस है। अर्थात् अलर्टनेस यानी क्या? जागृति इन वन कॉर्नर और एक्ज़ेक्टनेस अर्थात् एवरीव्हेयर, इन ऑल कॉर्नर्स जागृति।

अपना यह विज्ञान है न, यह वीतरागों का विज्ञान, यह 'एक्ज़ेक्टनेस' है। क्या है? 'एक्ज़ेक्टनेस'।

अवेरनेस से आगे 'बिवेरेनेस', उससे आगे 'अलर्टनेस' और उससे भी आगे 'एक्ज़ेक्टनेस', यानी कि तीन सौ साठ डिग्री में, सभी ओर जागृति रखना। जबकि 'अलर्टनेस' वाले होते हैं न, वे सिर्फ खुद के व्यापार में ही, एक ही कोने में (जागृति) रखते हैं। दूसरा बच्चे का, वे पढ़ रहे हैं या क्या हो रहा है, ये सारी जागृति नहीं रहती। और 'बिवेरेनेस' यानी क्या कि हर एक बाबत में जागृति, सचेत रहना, सावधान रहना, चौकन्ना रहना। 'अवेरनेस' क्या कहती है? कि यह जो इन्द्रिय ज्ञान में तन्मयाकार है, उस पर जागृति रखो।

प्रश्नकर्ता : हमको (इन्डियनों को) इसकी जागृति आ गई है। अब, हम सचेत रहते हैं ऐसा।

दादाश्री : वह तो बहुत समय से हम सब में आ चुकी है। उसके बाद ही तो हम सब 'बिवेरेनेस' में आए, 'बिवेरेनेस' से आगे 'अलर्टनेस' में आए, सिर्फ 'एक्ज़ेक्टनेस' नहीं है।

प्रश्नकर्ता : यहाँ अपने हिन्दुस्तान में जन्म, जन्म के साथ ही 'बिवेरेनेस' होती है।

दादाश्री : जन्म लिया तभी से 'बिवेरेनेस'। बच्चा हो तभी से 'बिवेरेनेस' होती है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा बिवेरे तो हो गए, लेकिन लोग तो रुक गए हैं। आगे कोई कुछ करता ही नहीं है, प्रयत्न नहीं करते।

दादाश्री : नहीं, वह तो आगे सहज ही होता रहता है। वह 'बिवेरेनेस' हो जाती है न! फिर आगे कोई भी व्यापार किया, कि भई, इन्कमटेक्स का 'एक्सपर्ट' हुआ। अरे, लाइन पकड़कर, 'एक्सपर्ट' हुआ अर्थात् उसमें एकदम 'अलर्ट' होता है वह।

एक्ज़ेक्टनेस, वह है संपूर्ण जागृति

अलर्टनेस से ऊपर हमारी एक्ज़ेक्टनेस है, यह। एक्ज़ेक्टनेस! संपूर्ण जागृति रहती है! एक क्षण के लिए भी इधर-उधर नहीं होती। नींद में भी जागृति इधर-उधर नहीं होती।

प्रश्नकर्ता : उसे जागृति कहते हैं।

दादाश्री : केवल जागृति। निरंतर जागृति रहे उसे एक्ज़ेक्टनेस कहते हैं! सभी में एक्ज़ेक्ट ही रहती है। निरंतर जागृति रहे, उसे एक्ज़ेक्टनेस होती है। अब इस समय वह संपूर्ण जागृति नहीं रहती है, इस काल की वजह से। कुछ अंश की कमी रहती है।

इस संसार में जो अलर्टनेस रहती है, वह यदि आत्मा में आ जाए तो काम हो जाएगा। लेकिन वह अलर्टनेस नहीं आ सकती, यों ही, सीधी तरह। ये हम एक्ज़ेक्टनेस देते हैं इसलिए आती है। वह एक्ज़ेक्टनेस नहीं आती लेकिन वहाँ अलर्टनेस तक आकर रुक जाता है। अलर्टनेस क्यों कही? तब कहते हैं, जागृति क्यों कही? तब कहते हैं, थोड़ी सी निद्रा है। एक्ज़ेक्टनेस में निद्रा नहीं है। अलर्टनेस अर्थात् जागृति। जागृति क्यों कही? तब कहते हैं, थोड़ी सी निद्रा है इसलिए

जागृति कही। झोंके आते हैं इसलिए अलर्टनेस में कहलाओगे। एक्जेक्टनेस में झोंका ही नहीं आता।

‘एक्जेक्टनेस’ में आना है। उसमें ‘रियल’ भी सही है और ‘रिलेटिव’ भी सही है। ‘रिलेटिव’ ज्ञेय स्वरूप है और ‘रियल’ ज्ञाता स्वरूप है। ‘ज्ञेय-ज्ञाता’ का संबंध है, वही ‘एक्जेक्टनेस’ है। ‘एक्जेक्टनेस’ में जीते जी ही मोक्ष अनुभव होता है। ‘एक्जेक्टनेस’ अर्थात् संपूर्ण जागृति!

आपका आत्मा अनुभव वह अंश अनुभव है। और अक्रम से आपको सहज प्राप्त हो गया है न, तो आपको उससे लाभ हो जाता है लेकिन जैसे-जैसे और भी प्रगति करोगे वैसे-वैसे अनुभव बढ़ता जाएगा। जैसे-जैसे जागृति उत्पन्न होगी उसके बाद पूरी बात समझनी पड़ेगी। परिचय में रहकर यह पूरा ज्ञान समझ लेना है।

जागृति और देखने-जानने का भेद

प्रश्नकर्ता : देखना-जानना और जागृति के बीच क्या फर्क है ?

दादाश्री : देखना-जानना और जागृति दोनों अलग चीजें हैं। देखना-जानना तो करेक्टनेस है और जागृति तो कम-ज्यादा होती रहती है। वह, आवरण के अधीन है। अभी यदि खीर खाई हो तो जागृति डल (मंद) हो जाती है और भूखे रहें हों तो जागृति बढ़ जाती है।

मन क्या बताता है, उसके ज्ञाता-द्रष्टा रह सकें वहाँ तक जागृति ले जानी है। उसके बाद उसे नहीं ले जाना पड़ेगा! यानी कि जागृति किसे कहते हैं? विचार आने से पहले ही समझ में आ जाए कि यह तो ज्ञेय है और मैं ज्ञाता हूँ।

फर्क, उपयोग और जागृति में

प्रश्नकर्ता : आत्मा की जागृति और आत्मा का उपयोग, इन दोनों में क्या डिफरेंस है ?

दादाश्री : डिफरेंस तो यह लाइट जलती रहे और आप कोई काम नहीं करो और सोते रहो, तो लाइट व्यर्थ जाएगी न? और यह जो लाइट का प्रकाश है, वह जागृति ही है, लेकिन यदि उसमें पढ़ोगे तो उसे उपयोग किया कहा जाएगा।

प्रश्नकर्ता : यानी कि जागृति को एक जगह पर केंद्रित करना, वही उपयोग कहलाता है ?

दादाश्री : ज्ञान देते हैं इसलिए जागृति तो है ही। उससे काम लेना है। जागृति तो यों ही चली जाती है, यदि उपयोग करेंगे तो काम में आएगी।

प्रश्नकर्ता : जागृति के संदर्भ में उपयोग किसे कहेंगे ?

दादाश्री : जागृति का उपयोग संसार की ओर करना, वह दुरुपयोग कहा जाएगा और इस ओर, हम आत्मा के प्रति, धर्म के प्रति करें तो वह सदुपयोग कहा जाएगा, शुभ उपयोग कहा जाएगा। और आत्म जागृति में आने के बाद शुद्ध उपयोग कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : उपयोग तो मूल आत्मा का ही है न ?

दादाश्री : नहीं, उपयोग आत्मा का नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो यह उपयोग किसका है, यह अभी भी समझ में नहीं आया।

दादाश्री : उपयोग सारा अहंकारी का है। आत्मा प्राप्त करने के बाद, आत्मदृष्टि होने के बाद, उसका उपयोग आत्मा की ओर जाता है, वह स्व-उपयोग कहलाता है और यदि वह दूसरी ओर जाए तो वह पर-उपयोग कहलाता है, बस। उपयोग अर्थात् जागृति का उपयोग किस ओर किया, वही देखना है। आत्मा उपयोग स्वरूप नहीं है।

अक्रम में जागृति ही मुख्य है

प्रश्नकर्ता : जागृति से उपयोग रहता है या उपयोग से जागृति रहती है ?

दादाश्री : जागृति से उपयोग रहता है और उपयोग रहे तो फिर से जागृति उत्पन्न होती है।

जागृति ही मुख्य चीज़ है और वह जागृति संपूर्ण हो जाए तो उसी को केवलज्ञान कहते हैं। अन्य कुछ भी नहीं है। उपयोग तो जागृति का परिणाम है।

जागृति दिखाती है निजदोष

प्रश्नकर्ता : जागृति तो आत्मा का लक्ष प्राप्त करने के लिए ही है न ?

दादाश्री : नहीं, लक्ष तो मिल चुका है। जागृति अर्थात् इन पाँच वाक्यों द्वारा तुरंत ही जाग्रत हो जाए, यानी कि ज्ञान हाज़िर हो जाए। जिसे हर एक बात में ज्ञान हाज़िर हो जाता है, वही जागृति कहलाती है। हर बार, जब आप पद गा रहे हों, तो उस पद का एक-एक शब्द दिखाई दे, तब जानना कि यह जागृति है। यह जो हम बुलवाते हैं, सीमंधर स्वामी को नमस्कार, उस क्षण हमारी जागृति उसी अनुसार करती है। उस जागृति को बढ़ाना है। ऐसे करते-करते बढ़ती जाएगी। थोड़ी आज बढ़ेगी, थोड़ी कल बढ़ेगी। ऐसे करते-करते संपूर्ण जागृति बढ़ जाएगी। जागृति ही लानी है। जागृति से खुद के सभी दोष दिखाई देते हैं। सामने वाले के बिल्कुल भी दोष नहीं दिखने चाहिए। खुद के दोष देखने से फुरसत ही नहीं मिले, वही जागृति कहलाती है।

संपूर्ण जागृति बरते, तब खुद की एक भी भूल नहीं होती! एक भी भूल हो, वह अजागृति है। दोष खाली किए बिना निर्दोष नहीं हो सकते और निर्दोष हुए बिना मुक्ति नहीं है।

खुद की भूलें देखें वही जागृति

प्रश्नकर्ता : पर दादा, यह ज्ञान लेने के बाद, अपनी जागृति ऐसी आती है, अपने खुद के दोष दिखते हैं, खूब सारे पाप दिखते हैं और उसकी घबराहट होती है।

दादाश्री : उसकी घबराहट रखने से क्या फ़ायदा? देखने वाला, होली देखने वाला मनुष्य जलता है क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : होली जलती है लेकिन होली देखने वाला जलता है क्या? वह तो चंदूभाई को होता है, तब कंधा थपथपाना कि 'भाई, होता है ऐसा। किया है इसलिए हो रहा है,' कहना।

प्रश्नकर्ता : इतने सारे पाप किए हैं दादा, और वे जब दिखते हैं, तब ऐसा होता है कि ये दादा नहीं मिले होते तो हमारा क्या होता!

दादाश्री : पाप खुद का दिखा, तब से ही समझो कि अपनी कोई डिग्री हुई है! इस जगत् में कोई खुद का पाप देख नहीं सकता है। कभी भी (खुद का) दोष देख नहीं सकता है। दोष देखे तो भगवान हो जाए।

प्रश्नकर्ता : पर दोष दिखें नहीं, ऐसा नहीं हो सकता ?

दादाश्री : नहीं! नहीं दिखें तब तो आत्मा चला जाएगा, आत्मा है तो दोष दिखते हैं। पर वे दोष नहीं हैं, ज्ञेय हैं वे। दोष दिखते हैं इसलिए तो आत्मा ज्ञाता है और वे ज्ञेय हैं।

आप अपनी भूलों को देखते हो, इतना सब देखते हो, क्या वह जागृति कम है? मनुष्य खुद की भूल नहीं देख सकता। बड़े-बड़े साधु महाराज होते हैं न, वे खुद की तो दो-तीन भूलें ही देख पाते हैं।

प्रश्नकर्ता : दादा, कई बार ऐसा अफसोस होता है कि प्रतिक्षण जागृति क्यों नहीं रहती है ?

दादाश्री : भूल को भूल जाने उसे जागृति कहते हैं। भूल को देखता है और जानता है, भूल होती है, उसे भी देखता है, बस। जागृति उसी को कहते हैं कि जिससे उसे पता चले कि यह भूल हो गई है। पता चल जाए, उसे जागृति कहते हैं और पता न चले, उसे जागृति नहीं कहते हैं।

करने वाले को अलग जाना, वही है जागृति

जो यहाँ पर आ चुका है, वह जागृति में रहता है। जागृति नामक पद उत्पन्न हो जाता है। खुद, खुद के दोष देखने लगता है। सारी जागृति उदयाकार नहीं होती। उदय आए तो उसमें हर्ज नहीं है, उदयाकार होने में हर्ज है। उदय तो ज्ञानी के भी होते हैं और अज्ञानी के भी होते हैं।

ज्ञानी की निशानी क्या है? तुरंत ही खुद के दोष दिखाई दें, ऐसी जागृति होती है और इसमें से किस प्रकार से छूटूँ यही निरंतर भाव रहता है।

असंयम को देखना, वह है जागृति

प्रश्नकर्ता : अपनी जागृति काफी है या नहीं, ऐसा कैसे पता चलेगा ?

दादाश्री : वह तो बार-बार पता चलेगा आपको आपके संयम पर से। कोई व्यक्ति आकर चंदूभाई से कहे कि, 'आप इस बच्चे को पढ़ाते हो न, वह बिल्कुल... बहुत ही खराब तरीके से पढ़ाते हो।' इस तरह से वह ब्लेम (आरोप) करता रहे आपके सामने तो उस समय चंदूभाई वापस उसे ब्लेम करते हैं। और आप उसे जानते हो कि चंदूभाई असंयमी हो गए। वह, जिसे असंयम हुआ ऐसा जानता है, वह जानने वाला संयमी है। अतः, जागृति है या नहीं, ऐसा पता चलता है या नहीं चलता? कोई गालियाँ दे तो अपनी जागृति

का पता चल जाता है। या फिर अच्छे कपड़े पहनकर शादी में जा रहे हों और कोई ऊपर से थूक दे तो उसे काटने नहीं दौड़ते और अंदर से जागृति उत्पन्न हो जाती है। चंदूभाई शायद झगड़ा कर भी लें लेकिन तब भी अंदर से ऐसा होता है कि ऐसा नहीं होना चाहिए। वह जागृति है और वही संयम है, असंयम को देखना, वही संयम है।

जागृति दैनिक जीवन में

प्रश्नकर्ता : अब, दैनिक जीवन में जागृति कैसे आ सकती है ?

दादाश्री : व्यवहार में क्लियर (शुद्ध) रहे, तो जागृति आएगी। जिस व्यवहार पर लोग उँगली उठाएँ, उस व्यवहार में जागृति नहीं आ सकती। आप व्यापारी हो और फिर एक दिन तीन बजे दुकान खोलो, एक दिन पाँच बजे खोलो तो आप में जागृति नहीं आएगी और आपका व्यवहार बिगड़ा हुआ कहा जाएगा। व्यवहार पर उँगली उठाने वाले नहीं होने चाहिए। तेरे पीछे उँगली उठाते हैं लोग ?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : अतः इस व्यवहार में तू व्यावहारिक बन जा। यदि कोई उँगली नहीं उठाएगा तो अच्छी जागृति आएगी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन ज्ञाता-द्रष्टा बनने के बाद भी व्यवहार तो रखना चाहिए न ?

दादाश्री : व्यवहार तो रहेगा। वह अपने आप होता ही रहेगा। ज्ञाता-द्रष्टा में तो व्यवहार रहता ही है। ज्ञाता-द्रष्टा हो जाने पर निश्चय, निश्चय में आ गया तो व्यवहार, व्यवहार में आ जाता है। लेकिन ज़्यादातर तो ध्यान रहता ही है। क्योंकि वह ध्यान आत्मा को नहीं रखना पड़ता, वह चित्त का है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, ऐसा क्यों होता होगा कि कई बार जागृति रहती है लेकिन फिर कहीं पर व्यवहार के काम-काज करने हों तो उसमें भूल हो जाती है।

दादाश्री : लेकिन वहाँ पर भी व्यवहार का काम रेग्युलर होना चाहिए न?

प्रश्नकर्ता : लेकिन ऐसे टूट क्यों जाता है?

दादाश्री : वह तो, आप सेट करेंगे तो जागृति रहेगी ही। आपको चंदूभाई से कहना है कि भाई व्यवहार नहीं बिगाड़ना चाहिए, साफ रहना चाहिए। व्यवहार में कोई शिकायत नहीं आनी चाहिए।

कचरा जलता है और जागृति बढ़ती है

प्रश्नकर्ता : फिर उस जागृति को बढ़ाने के लिए कुछ करना नहीं पड़ता?

दादाश्री : कुछ नहीं करना पड़ता और जैसे-जैसे फाइलें कम होती जाती हैं, वैसे-वैसे जागृति बढ़ती जाती है। आपकी जागृति बढ़ती जाएगी। क्योंकि पुराना कचरा निकल जाएगा न, इसलिए। बाकी, इन्हें तो अपने आप ही, उसी दिन जागृति हो गई थी न! उसके बाद से इन्हें जागृति रहती है, निरंतर। आपकी जागृति तो, पुराना कचरा जलने के बाद बढ़ेगी।

प्रश्नकर्ता : वह कार्य-कारण संबंध है न?

दादाश्री : हाँ, वह संबंध है न! वह कचरा सब जला देना पड़ेगा न? फिर वह कचरा आपको किसी तरह का नुकसान नहीं करेगा। कचरा रहा ही नहीं न फिर। सचमुच में लाइफ जीना तभी सही लगेगा न! यह तो, लाइफ पूरी बिगड़ जाती है।

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा बनने के बाद, इस

पुद्गल की परिणति में जो परिवर्तन होता है, वह किस कारण से दिखाई देता है?

दादाश्री : जागृति बढ़ने से।

प्रश्नकर्ता : वह जागृति किसकी बढ़ी? आत्मा की बढ़ी न?

दादाश्री : वह आत्मा की नहीं। जो सो रहा है, जिसे भ्रांति है, उसकी बढ़ी है।

जागृति का जन्म कड़वाहट में से...

इनका तो, रात-दिन किसी को दुःख नहीं हो और किसी को कुछ भी न हो, उसी में पूरा चित्त रहता है। जिसका चित्त पूरे दिन सेवा-परोपकार में ही रहता है, उसे ठंडक रहती है। अतः उन्हें इस ज्ञान की जागृति कम रहती है। इसके बजाय बिगड़े हुए लोगों को है न, उनमें यह जागृति बहुत बढ़ जाती है, क्योंकि उन्हें दुःख (अंतरदाह) बहुत रहता है न, इसलिए ठंडक बहुत हो जाती है। इसलिए ज़बरदस्त श्रद्धा बैठ जाती है। फिर उस अनुसार सभी कुछ ज़बरदस्त करते हैं। ऐसा कैल्कुलेशन है यह सारा।

अच्छा करने वाले को ठंडक रहती है। हम जब यह ज्ञान देते हैं न, उससे जो ठंडक होती है न, उस खराब वाले को जो ठंडक होती है, वह और ही प्रकार की होती है। बहुत उच्च प्रकार की। उसकी जागृति उसी दिन पक्की हो जाती है। इनकी (अच्छे लोगों की) जागृति मंद रहती है!

उन्हें यदि कोई हराने वाला मिल जाए, 'आप में अक्ल नहीं है', ऐसे दो-चार शब्द बोले न, तो तुरंत ही 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा जाग्रत हो जाता है। सभी लोग 'आइए, आइए, आइए' कहें तो फिर जागृति नहीं आती। दिन में दो-चार बार कड़वाहट मिले तो जागृति रहती है।

एक छोटे से छोटी बाबत, ठंडे पानी में भिगोए हुए कपड़ों में सनलाइट (साबुन) डालें और गरम पानी में भिगोए हुए कपड़ों में सनलाइट (साबुन) डालो तो इन दोनों में फर्क पड़ जाता है न, तो इसमें तो कितना अधिक फर्क पड़ जाएगा!

जागृति और पुण्य

प्रश्नकर्ता : क्या जागृति पुण्य पर आधारित है? जागृति और पुण्य का संबंध है?

दादाश्री : पुण्य तो हर कहीं रहता ही है। संयोग मिलने में भी पुण्य तो रहता ही है। लेकिन अपना निश्चय होना चाहिए कि मुझे जागृति रखनी ही है या पुरुषार्थ करना ही है।

प्रश्नकर्ता : अनुकूलता में सब ठंडा पड़ जाता है और प्रतिकूलता में जागृति अधिक रहती है, ऐसा क्यों?

दादाश्री : अनुकूलता में तो ऐसा है न, उसे मीठा लगता है न! ठंडी हवा आ रही हो तो एक घंटा बीत जाता है और यदि बहुत गर्मी हो तो एक घंटा निकालना कितना मुश्किल लगता है! जबकि ठंडक में एक घंटा आसानी से बीत जाता है। उसी तरह खाना यदि अच्छा हो तो जल्दी से खा लेते हैं और सख्त भूख लगी हो लेकिन खाना इतना अच्छा नहीं हो तो फिर जबरन खाना पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन प्रतिकूलता में जागृति ज्यादा क्यों रहती है?

दादाश्री : प्रतिकूलता आत्मा का विटामिन है और अनुकूलता देह का विटामिन है। अनुकूल संयोगों से शरीर अच्छा रहता है। प्रतिकूल संयोगों में आत्मा अच्छा रहता है। ये सभी संयोग फायदेमंद हैं। यदि समझना हो तो सभी संयोग फायदेमंद हैं।

अनुकूल और प्रतिकूल सभी कुछ बाह्य

भाग का ही है। बाहर का जो भाग है न, वही बरतता है, आत्मा नहीं बरतता। जब प्रतिकूल हो तब बाह्य भाग एबसेन्ट हो जाता है, तब आत्मा हाज़िर हो जाता है। अनुकूलता में बाह्य भाग प्रेज़न्ट (हाज़िर) रहता ही है। इसलिए हमें यदि आत्मा को प्रेज़न्ट रखना हो तो उसके लिए प्रतिकूलता अच्छी है और देह को प्रेज़न्ट रखना हो तो अनुकूलता अच्छी है।

हमें यदि आत्मा होना हो तो प्रतिकूलता लाभदायक है और आत्मा नहीं होना हो तो अनुकूलता लाभदायक है। जागृति के मार्ग पर चले तो प्रतिकूलता फायदेमंद है और मूर्च्छा के मार्ग पर अनुकूलता फायदेमंद है।

प्रश्नकर्ता : यदि अनुकूलता में भी जागृति रहे तो अधिक फायदा है न?

दादाश्री : (जागृति) पूरी तरह से नहीं रह सकती। इसलिए हम तो, यदि नहीं हो फिर भी प्रतिकूल कर देते हैं।

प्रश्नकर्ता : अनुकूल और प्रतिकूल तो मान्यता पर आधारित है न? या यों स्वाभाविक ही है?

दादाश्री : है एक्जेक्ट। लेकिन जब तक मन है, तब तक रहेगी ही न! जब तक मन का आधार है, तब तक रहेगी ही।

प्रश्नकर्ता : इस देह को भी सब अनुकूल और प्रतिकूल लगता ही है न?

दादाश्री : वास्तव में देह को नहीं लगता। मन का है।

प्रश्नकर्ता : गर्मी लगने पर एकदम बेचैनी हो जाए तो यह गर्मी देह को लगती है या मन को?

दादाश्री : मन को। देह को कुछ नहीं

लगता। बुद्धि कहे तो मन शुरू हो जाता है, बुद्धि नहीं कहे तो कोई हर्ज नहीं। बुद्धि अर्थात् संसार जागृति।

प्रश्नकर्ता : प्रतिकूलता भी अनुकूलता ही है। अंदर ऐसी उल्टी सेटिंग कर सकता है न बुद्धि से?

दादाश्री : हाँ, लेकिन जिसे मोक्ष में जाना हो, वह ऐसी सेटिंग करता है कि यह तो अनुकूल ही है। वास्तविक लाभ इसी में है, प्रतिकूलता में। हम सर्दी में भी ओढ़ा हुआ निकाल देते हैं, उससे जागृति रहती है।

प्रश्नकर्ता : उस समय कैसी जागृति में रहते हैं?

दादाश्री : जागृति जागृति में रहती है, नहीं तो जागृति सो जाती है।

प्रश्नकर्ता : ठंड लगने से नींद नहीं आती इसलिए फिर जाग जाते हैं। फिर जागृति में रहते हैं, ऐसा है?

दादाश्री : हाँ! वर्ना नींद आ जाती है और उस समय कोई जगाने वाला नहीं होता है न!

प्रश्नकर्ता : तब अंदर कौन सी जागृति में रहे?

दादाश्री : बेहोशी कम हो जाती है न! जागने पर, तू जो कुछ भी जानता है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा ही रहता है न!

जाग्रत का सानिध्य बढ़ाता है जागृति

प्रश्नकर्ता : जागृति किस तरह बढ़ती है?

दादाश्री : जिसे जागृति बढ़ानी हो, उसे जाग्रत के साथ में बैठना चाहिए। ऐसा है न, सभी झोंके खा रहे हों तो हमें भी झोंके आने लगते हैं।

सभी जाग्रत लोग साथ में हों तो जो झोंके आ रहे हों, वे भी बंद हो जाते हैं। इसलिए जाग्रत के साथ बैठना चाहिए। अभी जो राग है, बहुत हुआ तो वह ज्ञानी के प्रति होता है या ज्ञानी के फॉलोअर्स के प्रति होता है, लेकिन बाहर तो कहीं नहीं होता न?

प्रश्नकर्ता : अन्य कोई राग नहीं होता।

दादाश्री : तो इस राग को तो प्रत्यक्ष मोक्ष का कारण कहा गया है। उस राग से तो हमें उनके पास बैठने के संयोग मिलते हैं और उसके फलस्वरूप हम में जागृति उत्पन्न हो जाती है। दीया एकदम से प्रज्वलित हो जाता है। स्टेशन पर प्लेटफॉर्म पर सब बैठे होते हैं न, अपने साथ में बैठे सभी लोग झोंके खा रहे हों तो फिर आप भी सत्संग करते-करते झोंके खाने लगते हो। अतः जिनके साथ बैठते हैं न, वैसा फल मिलता है। अजाग्रत व्यक्ति के साथ में बैठने से अजागृति का और जाग्रत व्यक्ति के साथ बैठने से जागृति का फल मिलता है। व्यापार के लिए जाता है, तब फिर उन्हीं लोगों के साथ बैठना पड़ता है न?

प्रश्नकर्ता : बैठना पड़ता है। तो उससे अजागृति आ जाती है न?

दादाश्री : हाँ, आती है न! स्वाभाविक रूप से आ जाती है। यदि उसे उस समय जानता रहे न, तो वह भी एक प्रकार की जागृति है। इससे अजागृति उत्पन्न हुई है, ऐसा जाने, तो वह भी एक जागृति है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, इस जागृति को रोकने वाले कारण पहले के हैं या अभी के भी कोई कारण है?

दादाश्री : पिछले तो सभी कारण अजागृति वाले ही थे। अभी जो ज्ञान दिया है उसके बाद

यदि आज्ञा में रहे तो उतनी ही उच्च प्रकार की जागृति रहेगी।

प्रश्नकर्ता : तो अभी जागृति को रोकने वाले कारण कौन से हैं ?

दादाश्री : मेरे साथ ज्यादा परिचय में नहीं आ पाए हों, मेरी बात पूरी समझ में नहीं आती हो।

प्रश्नकर्ता : आपकी बात को कोई पूर्ण रूप से समझ सकता है क्या ?

दादाश्री : क्यों नहीं समझ सकता ? परिचय में रहे और उसने खुद ने तय किया हो कि समझना है तो फिर क्यों नहीं समझ सकेगा ?

प्रश्नकर्ता : तय करने के बावजूद भी अभी तक समझ में नहीं आता, उसका क्या कारण है ?

दादाश्री : परिचय नहीं है। वह खुद का संपर्क तोड़ देता है। आज दो घंटे बैठा और फिर कच्चा रह जाता है और दूसरे दिन वापस दो घंटे बेकार जाते हैं। इसके बजाय लंबे समय तक अखंड बैठा रहे न तो हल आ जाएगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह तो फिर बाहरी संयोगों के अधीन है न ? आपके संपर्क में रहने का निश्चय हो...

दादाश्री : वह ठीक है। इसीलिए हम कहते हैं न, 'व्यवस्थित है'। ऐसे संयोग मिलने चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन ऐसा निश्चय है इसलिए आगे जरूर मिलेगा ? ऐसा निश्चय है इसलिए व्यवस्थित बदलेगा ?

दादाश्री : वह तो बदलेगा न ! व्यवस्थित बदलता ही रहता है। जैसा अपना निश्चय होगा न, व्यवस्थित उसी तरफ जाएगा। अपना निश्चय जिस दिशा में होगा, व्यवस्थित को उसी दिशा

में जाना पड़ेगा। व्यवस्थित का नियम ऐसा है कि 'तेरा निश्चय किस तरफ का है ?'

प्रश्नकर्ता : लेकिन फिर पहले के निश्चय तो बाधक नहीं होंगे न ?

दादाश्री : पहले के निश्चय से तो यहाँ लेना-देना नहीं है। आज क्या निश्चय है ! लेकिन वह निश्चय विरोधाभासी नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन प्रकृति के सामने सभी लाचार होते हैं।

दादाश्री : सिर्फ असामान्य पुरुष ही प्रकृति के सामने लाचार नहीं होते। बाकी सभी प्रकृति के सामने लाचार !

ज्ञानी के सानिध्य से खिलती है जागृति

यहाँ पर यदि लोग शोर-शराबा कर रहे हों तो यहाँ की बात सुनाई नहीं देगी न हमें ? वैसा ही है यह सब। भीतर कर्म का उदय आए, उस समय अंदर यों घुटन होती है। उसमें हर्ज नहीं है, वह नुकसानदायक नहीं है। उस समय कहीं जागृति चली नहीं गई है। जागृति रहती ही है। यह जागृति पूरी तरह से नहीं रहती, झोंका खा जाता है।

मैंने कहा, यह जागृति है लेकिन खिलती नहीं है। इसलिए हम इस तरह बातें करते रहते हैं ताकि खिले। इस साइड की खिलती है, उस साइड की खिलती है। इस कोर्नर की खिलती है, उस कोर्नर की खिलती है। यानी जागृति पूरी तरह से खिलती है। इसलिए हम बातें करते हैं, करने को नहीं कहते।

प्रश्नकर्ता : जागृति का जो क्रम है, उसी अनुसार जागृति रहती है, उस जागृति को बढ़ाने का कोई रास्ता है क्या ?

दादाश्री : हाँ। हमारे पास बैठे रहने से

जागृति बढ़ती है। इसलिए लोग रोज़ आते रहते हैं न! वर्ना एक ही दिन में नहीं कर दूँ? अच्छे काल में तो एक ही बार बात करनी होती थी। ये तो कितनी अधिक उधारी वाले! हाँ, अत्यंत उधारी वाले। दिवालिया सीट पर बैठे हुए हैं। इसलिए रोज़-रोज़ विधि करता हूँ फिर भी उधार खत्म नहीं होता। लेकिन फिर भी ऐसे करते-करते खत्म हो जाएगा।

यों बढ़ेगी जागृति

प्रश्नकर्ता : जागृति बहुत बढ़ानी हो तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : अब ज्ञान देने के बाद जाग्रत होते हैं। उसके बाद जितना पाँच आज्ञा का पालन करेगा, उतनी ही उसकी जागृति बढ़ती जाएगी। जागृति से उन आज्ञाओं का पालन भी किया जा सकेगा और उससे जागृति वापस बढ़ती भी जाएगी। अन्य कोई उपाय नहीं है।

प्रश्नकर्ता : दादा, लेकिन इस तरह ज्ञाता-द्रष्टा पद में रहने के लिए जागृति बढ़ें, उसके लिए कुछ करना है?

दादाश्री : जागृति तो बढ़ ही जाएगी। दादा का ज्ञान ले, पाँच आज्ञा का पालन करे तो निरी जागृति ही है।

प्रश्नकर्ता : पाँच आज्ञा का और भी अच्छी तरह से पालन करें, इसके लिए हमें क्या करना चाहिए?

दादाश्री : हाँ, उससे बढ़ता जाएगा सब। दादा के आशीर्वाद लिए, उससे बढ़ेगा। जैसे-जैसे आशीर्वाद लेंगे, दर्शन करेंगे, विधि करेंगे तो बढ़ता जाएगा।

प्रश्नकर्ता : जागृति बढ़ाने के लिए प्रतिक्रमण का हथियार अधिक काम आएगा न?

दादाश्री : हाँ, उस हथियार का उपयोग तो करना ही है न! प्रतिक्रमण से क्या होगा कि सिर्फ जागृति बढ़ेगी इतना ही नहीं, और भी बहुत लाभ होंगे।

आज्ञा का फल जागृति

प्रश्नकर्ता : किसी को यदि जागृति कम रहती है, तो क्या उसका अर्थ ऐसा हुआ कि आपकी आज्ञा का पालन करने में कमी है?

दादाश्री : आज्ञा पालन करने की जो शक्ति है न, वह तो जागृति कम रहती है इसलिए आज्ञा का पालन नहीं कर सकता बेचारा। और पालन नहीं कर सकता, इसलिए उसका वैसा ही फल मिलता है। बेचारे की आज्ञा पालन करने की इच्छा तो बहुत है, लेकिन जागृति क्यों कम रहती है? तो कहते हैं कि कुछ ऐसे कर्म बाँधे हुए हैं कि जिनके लिए तीन घंटों तक खड़े (विचारों में तन्मय) रहना पड़ता है एक ही जगह पर और जो सीधे लोग हैं न, वे तो एक विचार आते ही दस-पंद्रह मिनट में उसका हल ला देते हैं। उन्हें यह ज्ञान हाज़िर रहता है पूरी तरह से, कम्प्लीट। लेकिन कोई व्यक्ति तो घंटों तक उसी में खो जाता है। अर्थात् इस ज्ञान में वहाँ पर गड़बड़ हो जाती है। फिर भी यह ज्ञान उसकी हेल्प करेगा। क्योंकि यह *निकाली* बाबत है न! *निकाल* (निपटारा) होते-होते *चीकणा* (गाढ़) माल खत्म हो जाएगा और फिर बाद में वह अच्छा माल आएगा।

अपना तो पाँच आज्ञा का पालन किया कि मोक्ष! बाकी सब तो दखल कहलाएगा। फिर यदि आज्ञा का कम-ज़्यादा पालन होता है तो उसमें हर्ज नहीं है। लेकिन पाँच आज्ञा का *लक्ष* (जागृति) रहना चाहिए। जैसे यहाँ रोड पर जो ड्राइविंग करते हैं, उनके *लक्ष* में रहता ही है कि ट्रैफिक के नियम क्या हैं! ऐसा *लक्ष* में रहता ही

है वर्ना टकरा जाएगा। यहाँ का टकराया हुआ दिखाई देता है लेकिन वहाँ टकराया हुआ दिखाई नहीं देता न! और तहस-नहस हो जाता है। लोगों को पता नहीं चलता।

निरंतर, चौबीसों घंटे जागृति रहनी चाहिए। यदि हमारे कहे अनुसार, हमारी संपूर्ण आज्ञा के अनुसार रहे और फिर अगर एक भी चिंता हो तो दो लाख रुपये का दावा करना, कहा है न!

ये जो आज्ञाएँ दी हैं, वे जागृति देने वाली हैं। उन आज्ञाओं में रहेंगे न, तो भी बहुत हो गया। पाँच आज्ञा, वही ज्ञान है, दूसरा कोई ज्ञान नहीं है।

ज़रूरत जागृति की ही

प्रश्नकर्ता : आज्ञा के लिए सहज क्यों नहीं हो जाता?

दादाश्री : वह तो खुद की कमी है।

प्रश्नकर्ता : क्या कमी है?

दादाश्री : जागृति की कमी, उपयोग रखना पड़ता है न थोड़ा-बहुत।

एक व्यक्ति सोते-सोते विधि कर रहा था। अब जागते हुए, पच्चीस मिनट लगते हैं बैठे-बैठे, और सोते-सोते करने में उसे ढाई घंटे लग गए। ऐसा क्यों?

प्रश्नकर्ता : बीच में झपकी ले लेता है।

दादाश्री : नहीं, प्रमाद उत्पन्न हो जाता है न इसलिए फिर यह भूल जाता है कि कहाँ तक बोला था। फिर से दोहराता है। अपना विज्ञान इतना अच्छा है कि कुछ दखल हो जाए, ऐसा नहीं है। थोड़ा-बहुत रहता है?

प्रश्नकर्ता : पाँचों आज्ञाओं का एट ए टाइम

पालन करना इतना आसान नहीं है न! वह खींच ले जाता है मन को!

दादाश्री : रास्ते पर चलते-चलते शुद्धात्मा देखते जाएँ, इसमें कैसे (आज्ञा) कठिन है? क्या कठिन है? डॉक्टर ने कहा हो कि, 'आज से आठ-दस दिन तक दाहिने हाथ से मत खाना।' इसमें याद रखना है, बस इतना ही काम है न? यानी कि थोड़ी जागृति रखनी है, इतना ही काम है न! जागृति नहीं रहती इसलिए दाहिना हाथ चला जाता है उस ओर। अनादि से उल्टा अभ्यास है न।

ये पाँच वाक्य तो बहुत भारी वाक्य हैं। ये वाक्य समझने के लिए बेसिक (आधारभूत) हैं। लेकिन बेसिक बहुत भारी हैं। धीरे-धीरे समझ में आते जाएँगे। यों दिखते हैं हल्के, हैं भी आसान, लेकिन दूसरे अंतराय बहुत हैं न! मन में विचार चल रहे हों, अंदर धूल उड़ रही हो, धुआँ उठ रहा हो, तब वह कैसे रिलेटिव और रियल को देखें?

प्रश्नकर्ता : दादा, आपकी जो पाँच आज्ञाएँ हैं, उनका पालन करना ज़रा कठिन है या नहीं?

दादाश्री : कठिन इसीलिए है कि आपको पिछले कर्म धक्के लगाते रहते हैं। पिछले कर्मों की वजह से आज खीर खाने को मिली। और ज़्यादा खीर माँगता है, उससे डोज़िंग हो गया इसलिए आज्ञा पालन नहीं हो सका। अब यह अक्रम है। क्रमिक मार्ग में क्या करते हैं कि खुद सारे कर्मों को खपाते-खपाते आगे बढ़ता है। खुद कर्मों को खपाकर, अनुभव करके और भुगतकर फिर आगे बढ़ता है और यहाँ बात कर्म खपाए बगैर की है। इसलिए हमें ऐसा कहना है कि, 'भाई, इन आज्ञाओं में रहना और नहीं रह पाओगे तो चार जन्मों की देरी होगी, उससे क्या नुकसान होने वाला है?' काँज़ पहले बदलते हैं और परिणाम बाद में बदलते हैं।

सारे ही वर्तन परिणाम हैं और अंदर जो प्रतीति है, वह पुरुषार्थ है। उस पुरुषार्थ का फल आया। और यह पहले के पुरुषार्थ का फल अभी आया है। अभी तो यदि कहीं व्यापार में नुकसान हो जाए तो अकुलाहट हो जाती है, उसका क्या कारण है? अकुलाहट, वह पहले का परिणाम है, वह आज का परिणाम नहीं है।

यह ज्ञान देने के बाद में कॉजेज़ उत्पन्न नहीं होते। पिछले जन्म के कॉजेज़ का ही आज परिणाम आता है। ये परिणाम बदले नहीं जा सकते। अतः परिणामों को 'देखते' रहना है। यदि कॉजेज़ होते तो हमें आपसे कहना पड़ता, 'देखो, ऐसा रखना, वैसा रखना।' लेकिन ये कॉजेज़ नहीं हैं, ये परिणाम हैं। सिर्फ इफेक्ट है।

जागृति, वह खुद का पुरुषार्थ है

प्रश्नकर्ता : क्या जागृति इफेक्ट है ?

दादाश्री : जागृति को इफेक्ट नहीं कह सकते। जागृति, वह अपना पुरुषार्थ ही है। इसलिए उसे इफेक्ट नहीं कह सकते, और वह किसी पर डिपेन्डेन्ट (आधारित) नहीं है।

प्रश्नकर्ता : वह किस तरह से उत्पन्न होती है ?

दादाश्री : हमारे ज्ञान देने के बाद यदि आज्ञा में रहे तो जागृति उत्पन्न होती है। आज्ञा पालन से जागृति उत्पन्न होती है। यह जागृति तो रहती ही है, लेकिन आज्ञा में नहीं रहने से ये सब असरें होती रहती हैं। इसलिए वह जागृति चली जाती है।

जागृति, इफेक्ट नहीं है। यह जागृति, यही आत्मा है। संपूर्ण जागृति, वही फुल आत्मा। जितनी जागृति, उतना आत्मा और जितनी अजागृति, उतना यह पुद्गल!

प्रश्नकर्ता : ऐसा भय नहीं रहता कि इसमें

फँस जाएँगे लेकिन मन में ऐसा होता है कि अभी तक एन्ड नहीं आया।

दादाश्री : अभी तो एन्ड आया ही नहीं। एन्ड तो बहुत दिनों बाद आया। और जब एन्ड आया, तब मन में भाव भी नहीं रहेगा।

प्रश्नकर्ता : इफेक्ट न हो ऐसा हो जाए तो अच्छा, ऐसा रहता है बस!

दादाश्री : इफेक्ट तो होता ही रहेगा। माल भरा हुआ है तो इफेक्ट तो होगा न! और इफेक्ट होगा तभी जागृति रहेगी, वर्ना जागृति नहीं रहेगी।

प्रश्नकर्ता : छूटने के लिए बात बताई, वहाँ तक यह इक्वेशन (समीकरण) ठीक है, लेकिन स्वसत्ता किसमें है ?

दादाश्री : जो भूलें होती हैं, उन पर जो जागृति रहती है और सचेत करती है, वह स्वसत्ता है।

प्रश्नकर्ता : उस स्वसत्ता का अनुभव करवाइए न!

दादाश्री : अभी नहीं हो पाएगा, बेहिसाब उधार है! उधार चुकाए बिना स्वसत्ता उत्पन्न नहीं हो सकती न! सारा उधार चुक जाने के बाद स्वसत्ता उत्पन्न होगी। कहीं भी परसत्ता में नहीं घुसे तो वहीं पर स्वसत्ता है।

जहाँ तन्मयाकार वहाँ जागृति का अभाव

प्रश्नकर्ता : जब कोई क्रिया करते हैं, उस समय एकाकार हो जाते हैं, उसके बाद हमें वापस शुद्धात्मा के लक्ष में कौन लाता है ?

दादाश्री : कोई भी नहीं लाता। उस समय भी था ही। यह तो, वृत्तियाँ तन्मयाकार हो जाती हैं। आत्मा खुद तो प्रकाश के रूप में था ही। वह तो, जब वृत्तियाँ तन्मयाकार हो जाती हैं न, तब

ऐसा लगता है कि शुद्धात्मा का लक्ष नहीं रहा या क्या? अरे, है ही। उस घोटाले के चले जाने के बाद शुद्धात्मा वापस हाज़िर ही दिखाई देगा आपको। वह नींद में भी हाज़िर है।

प्रश्नकर्ता : यदि तन्मयाकार हो जाते हैं तो उसे जागृति का अभाव समझना चाहिए या क्या समझना चाहिए?

दादाश्री : जागृति का अभाव नहीं है। जागृति तो वहाँ पर है ही। जागृति तो है, आपके कर्म का उदयबल ज़बरदस्त है, फोर्स है। जब तक आधे इंच के पाइप में से पानी आ रहा हो तब तक उँगली टिकी रहती है और अगर बहुत फोर्स से डेढ़ इंच के पाइप में से पानी आए तो उँगली खिसक जाती है। ऐसा फोर्स है कर्मों का। बाद में जब वह फोर्स कुछ कम हो जाएगा तब फिर से उँगली टिकेगी। जागृति तो निरंतर रहती ही है। लेकिन जितना भी इस तरह से हुआ, उन फाइलों का आपको फिर से निकाल करना पड़ेगा। जागृति की उपस्थिति के बिना जो फाइलें गईं, उन फाइलों का फिर से जागृतिपूर्वक निकाल करना पड़ेगा। यानी कि वे सेकन्ड टाइम आएँगी। इसी जन्म में आती रहेगी। जागृति तो निरंतर रहेगी।

प्रश्नकर्ता : खास तौर पर कभी जब पसंदीदा (संयोग) आए तब उसमें तन्मयाकार हो जाते हैं।

दादाश्री : हाँ, लेकिन वह तो चंदूभाई होते हैं न, आप कहाँ होते हो? आपको जब पता चले कि चंदूभाई अब तन्मयाकार हो गए हैं तो उसके बाद 'आप' 'चंदूभाई' से कहना, 'कुछ अनचाहा आए तब फज़ीता करते हो, उसकी बजाय ऐसे सीधा रखो न!'

अनचाहा आए तब विरोध करता है। अच्छा नहीं लगने पर जो विरोध करता है, वह भी चंदूभाई है, जिसे अच्छा लगता है, वह भी 'चंदूभाई'।

अर्थात् जो राग-द्वेष करता रहता है, वह चंदूभाई और जो वीतराग रहता है, वह 'आप!' चंदूभाई द्वेष करे फिर भी उस वक्त आप वीतराग रहते हो और चंदूभाई राग करते हैं फिर भी आप वीतराग रह सकते हो, ऐसे ज्ञाता-द्रष्टा और परमानंदी आप!

प्रश्नकर्ता : तन्मयाकार होते हैं तो क्या नया कर्म चार्ज होता है?

दादाश्री : नहीं, वह पता चल जाता है न बाद में! फिर आपको पता चलता है न कि ये चंदूभाई तन्मयाकार हो गए हैं, तो वह चार्ज नहीं होगा। कपड़ों में साबुन डाला लेकिन उसे धोने में कमी रह गई हो तो फिर से धो देना। कपड़ों को निचोड़ने में कुछ भूलचूक हो जाए तो फिर से निचोड़ लेना...। आसान रास्ता है न, दादा का रास्ता।

प्रश्नकर्ता : यह लक्ष तुरंत आ जाता है, लेकिन ऐसे हर मिनट लक्ष नहीं रहता।

दादाश्री : वह तो, चंदूभाई तन्मय हो जाते हैं, आप नहीं होते। यह ज्ञान ही ऐसा है न, तन्मय होता ही नहीं है न! आपको, चंदूभाई तन्मय हो जाते हैं, उसे देखते रहना है और उस अभ्यास की ज़रूरत है। उसे सत्संग की ज़रूरत है। जैसे-जैसे आप हमारे पास आकर बैठोगे, वैसे-वैसे शक्ति बढ़ती जाएगी।

जागृति पद का वैज्ञानिक स्पष्टीकरण

प्रश्नकर्ता : तन्मयाकार कौन होता है?

दादाश्री : अहंकार। उसमें जो तन्मयाकार नहीं होने देती, वह जागृति है। वही जुदा रखती है। मूल आत्मा तन्मयाकार नहीं होता। आप अजागृति के कारण तन्मयाकार हो जाते हो न!

प्रश्नकर्ता : ज्ञान प्राप्त करने के बाद यदि जागृति रहे, तो प्रतिष्ठित आत्मा तन्मयाकार नहीं होता?

दादाश्री : फिर भान रहता है, वह एक जागृति है और जागृति जब अपने स्वभाव में आएगी, तब वह तन्मयाकार नहीं होगा। जब तक पिछला फोर्स है, तभी तक हिल जाता है। फोर्स कम हो जाने के बाद में तन्मयाकार नहीं होगा। जो भी डिस्चार्ज है, वह सारा टंकी का पानी है, भरा हुआ माल है।

प्रश्नकर्ता : तो हमें क्या समझना है? आपने ऐसा कहा कि जागृति आ जाएगी तब आप तन्मयाकार नहीं होओगे तो उसे किस प्रकार से समझना है?

दादाश्री : 'आप' अर्थात् क्या? मूल आत्मा नहीं। अभी भी 'मैं' तो रहा हुआ ही है, पहले वह 'मैं' प्रतिष्ठित आत्मा के रूप में था, अब वह 'मैं' जागृति के रूप में है। वह 'मैं' तन्मयाकार नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : इसका अर्थ यह हुआ कि यदि हम तन्मयाकार नहीं होते तो प्रतिष्ठित आत्मा तन्मयाकार नहीं होता?

दादाश्री : नहीं। 'हम' यानी कौन? उस समय जो हाज़िर है, वह! उस समय जो आपकी बिलीफ में है। अभी तक संपूर्ण रूप से शुद्धात्मा नहीं हुए हैं। और फिर मूल प्रतिष्ठित आत्मा छूट गया। अब, जाग्रत आत्मा अर्थात् जागृति। जागृति, जो परिणाम है, वहाँ अभी तन्मयाकार नहीं होती।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान मिलने के बाद प्रतिष्ठित आत्मा तो है ही, तो वह क्या करता है? बाद में उसकी स्थिति क्या रहती है?

दादाश्री : फिर उसकी कोई स्थिति नहीं रहती। वह डिस्चार्ज के रूप में है। अर्थात् निश्चेतन-चेतन है। वह ज्ञेय के रूप में रहता है। फिर ज्ञेय के रूप में वह 'क्या करता है और क्या नहीं', उसे जो जानती है, वह जागृति है।

स्वरूप का भान होने से पहले प्रतिष्ठित आत्मा को ही हम ज्ञाता मानते थे। स्वरूप ज्ञान की प्राप्ति के बाद में वह प्रतिष्ठित आत्मा खुद ही ज्ञेय हो जाता है और वहाँ फिर खुद जागृति ही ज्ञाता हो जाती है। यानी कि पहले 'मैं' प्रतिष्ठित आत्मा के रूप में था, वही 'मैं' अब जागृति रूपी हो जाता है और मूल आत्मा तो अभी उससे भी आगे है। यह ('मैं'), जागृति में आ गया। संपूर्ण जाग्रत होने पर मूल आत्मा में एकाकार हो जाता है। जब तक संपूर्ण नहीं हो जाता, तब तक जुदा रहता है, तब तक अंतरात्मा के रूप में रहता है। वहाँ पर बहिर्मुखी पद छूट चुका होता है। अंतरात्म दशा खत्म हुई कि परमात्मा पद प्राप्त हो जाता है!

उपादान के आधार पर जागृति-लक्ष

लक्ष तो, हर काम करता रहता है लेकिन वह काम खत्म हुआ कि **लक्ष** आ ही जाता है। समय मिलते ही **लक्ष** में यही रहता है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा **लक्ष** रहता है। **लक्ष** तो क्रमिक मार्ग में है। आपने यहाँ तो 'मैं शुद्धात्मा हूँ', उसे ऐसा ख्याल में रहता है।

प्रश्नकर्ता : 'मैं शुद्धात्मा हूँ' उसका **लक्ष** रहता है।

दादाश्री : क्रमिक मार्ग में (अहंकारपूर्वक) **लक्ष** में रहता है और अपने यहाँ पर (सहज) ख्याल रहता है।

प्रश्नकर्ता : ख्याल और **लक्ष** में क्या अंतर है, वह समझाइए।

दादाश्री : **लक्ष** किसी जगह पर कीलों से बाँधा हुआ होता है और ख्याल एनी व्हेयर (कहीं भी) हो सकता है। क्योंकि क्रमिक मार्ग में क्षयोपशम आत्मा प्राप्ति होने के कारण क्षण भर में **लक्ष** चला जाता है। **लक्ष** में अर्थात् जो एक ही जगह पर रहे और क्षायक आत्मा प्राप्त किया है तो ख्याल में

रहता है। लक्ष नहीं, परंतु ख्याल। अब, क्या शुद्धात्मा आपके ख्याल में रहता है? 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा?

प्रश्नकर्ता : टुकड़े-टुकड़े ख्याल में रहता है।

दादाश्री : हाँ, टुकड़े-टुकड़े। काम पूरा हो जाता है तब ख्याल में आ जाता है न? जब कोर्ट में काम करते हो, उस समय आपको ख्याल में रहता है न?

प्रश्नकर्ता : मैं जब बोल रहा होता हूँ तब लक्ष नहीं रहता लेकिन जब सुन रहा होता हूँ तब लक्ष रहता है।

दादाश्री : कई लोगों को तो बोलते समय भी ख्याल रहा करता है। हर काम करते समय ख्याल में रहता है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा ख्याल रहता है इसलिए ही अपने ध्यान में रहता है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ' और वही शुक्लध्यान है। अन्य किसी को ऐसा ध्यान नहीं रहता कि, 'मैं शुद्धात्मा हूँ'।

जब ध्यान रहता है उस समय वापस थोड़ा अनुभव चखता ही रहता है। अनुभव का स्वाद आता ही रहता है। जैसे-जैसे अधिक से अधिक यह ख्याल में रहेगा, वैसे-वैसे और भी अधिक अनुभव उत्पन्न होगा और ख्याल में रहा करेगा। निरंतर आत्मा का अनुभव तो है ही। जितने समय तक प्रतीति उतने समय तक अनुभव। अनुभव के बिना तो यह प्रतीति बैठती ही नहीं न!

निश्चयरूपी पुरुषार्थ से बढ़ती है जागृति

प्रश्नकर्ता : ज्ञान की जागृति सतत रखने के लिए अन्य किसी अभ्यास की ज़रूरत है?

दादाश्री : ज्ञान की जागृति सतत ही रहती है। अन्य किसी अभ्यास की ज़रूरत ही नहीं है। सिर्फ आपके निश्चय में ऐसा रहना चाहिए कि यह सतत रहनी ही चाहिए। सतत क्यों नहीं लगती? तो, अन्य सभी कारण क्या अंतराय कर

रहे हैं, उन्हें देखना चाहिए। यानी कि ज्ञान की जागृति निरंतर रहती है, लेकिन आपका निश्चयबल होना चाहिए। निश्चय वही पुरुषार्थ है! 'जागृति नहीं रहती', ऐसा कहा तो फिर नहीं रहेगी। 'रहनी ही चाहिए, क्यों नहीं रहेगी', तो रहेगी और विघ्न आएँगे ही नहीं, आप सत्संग में रहना न!

यह ज्ञान भी बहुत जागृति वाला दिया है। लेकिन खुद जान-बूझकर गड़बड़ करता है। इसलिए जागृति कम है। यदि जागृति रहे, तब तो उसे कुछ स्पर्श ही नहीं करेगा!

प्रश्नकर्ता : आप जब कहते हैं कि सभी चाबियाँ आपके पास हैं, हमारा निश्चय है कि आज्ञा में रहना है, तो फिर हमारी वह अजागृति इतनी देर तक क्यों रहती है?

दादाश्री : जागृति तो लानी ही चाहिए न! जागृति तो बढ़ानी ही चाहिए न आपको। वही पुरुषार्थ है न! जागृति ही पुरुषार्थ है। अन्य कोई पुरुषार्थ नहीं है। पाँच आज्ञाओं का जितना पालन होगा, तब सारी जागृति उत्पन्न हो जाएगी। वर्ना जागृति कैसे उत्पन्न होगी? आज्ञा पालन नहीं करते हो इसलिए जागृति कम है!

संपूर्ण जागृति, वही है केवलज्ञान

इस ज्ञान का अर्थ क्या है? जागृति। अपनी यह आत्मजागृति है और उसका फल है केवलज्ञान। निरंतर जागृति रहनी चाहिए। एक सेकन्ड भी अजागृति रहे तो नहीं चलेगा। संपूर्ण जागृति नहीं रह पाएगी लेकिन कुछ अंश तक निरंतर रहती है! संपूर्ण जागृति होने पर वह केवलज्ञान कहलाता है। संपूर्ण और निरंतर! यह आपमें अपूर्ण और निरंतर, ऐसी जागृति शुरू हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : अपूर्ण और निरंतर जागृति, वह नहीं समझ में आया।

दादाश्री : यानी कि केवलज्ञान नहीं, यदि पूर्ण होती तो केवलज्ञान कहलाता। अतः आपको अब पुरुषार्थ करना बाकी रहा, आप पुरुष हुए, इसलिए। तो अब आप पुरुषार्थ करो। आप जितना आज्ञा पालन करोगे, अंदर उतनी ही जागृति बढ़ती जाएगी, पूर्णता आती जाएगी। जागृति जहाँ तक पहुँची, उतना आत्मा के नज़दीक पहुँचे। जितना नज़दीक पहुँचे, उतना ही अधिक उजाला, उतना अधिक प्रकाश।

प्रश्नकर्ता : इस प्रकार से अब, जैसे-जैसे जागृति बरतती जाती है वैसे-वैसे ज्ञाता-द्रष्टापन भी बढ़ता है ?

दादाश्री : ज्ञाता-द्रष्टापन जागृति के अधीन है, बुद्धि के अधीन नहीं है। जगत् बुद्धि के अधीन है। बुद्धि और जागृति, दो अलग चीज़ें हैं। अंत में जब जागृति पूर्ण हो जाती है तब वह केवलज्ञान कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : जिस प्रकार यह टेपरिकॉर्डर सभी आवाज़ों को वीतराग भाव से ग्रहण कर सकता है, उसी प्रकार से जैसे-जैसे जागृति बढ़ती जाएगी वैसे-वैसे प्रत्येक पर्यायों को देख सके, ऐसा होगा ?

दादाश्री : सभी देख सकेगा। जागृति ही आत्मा है।

प्रश्नकर्ता : जागृति को देखने वाला आत्मा है या जागृति खुद आत्मा है ?

दादाश्री : जागृति खुद ही आत्मा है। आत्मा कोई अन्य चीज़ नहीं है, जागृति ही है।

आपको जागृति तो आ गई है। अब जागृति बढ़ते-बढ़ते-बढ़ते केवलज्ञान तक पहुँच जाएगी। केवलज्ञान अर्थात् फुल स्कोप की जागृति। वह कुछ हद तक (सूक्ष्म) पतली हो गई है। निरंतर जागृति अर्थात् केवलदर्शन हुआ कहलाता है, और

फुल स्कोप में हो जाए तो केवलज्ञान कहलाता है। जागृति जब पूर्णत्व तक पहुँच जाती है, उसी को केवलज्ञान कहते हैं। फिर उससे आगे स्टेशन नहीं है, यही अंतिम स्टेशन है।

जागृति, वही ज्ञान है और संपूर्ण जागृति को ही केवलज्ञान कहते हैं। तमाम प्रकार की जागृति, एक-एक अणु, एक-एक परमाणु की जागृति, उसी को केवलज्ञान कहते हैं। केवलज्ञान की जो अंतिम सीढ़ी है, उसमें केवल स्वरूप की ही रमणता रहती है। जागृति में से 'अनुभव' होता है और जागृति में से ही 'केवलज्ञान' होता है।

केवलज्ञान, वही मोक्ष है। मोक्ष, वही केवलज्ञान है।

जागृति - मदर ऑफ मोक्ष

प्रश्नकर्ता : मोक्ष और जागृति एक ही है ?

दादाश्री : जागृति से ही मोक्ष है। अजागृति मतलब क्या? आपका किसीके साथ मतभेद हो जाए, वह आपकी अजागृति है। जिसे हिताहित का भान है वह जाग्रत और जिसे हिताहित का भान नहीं है वह अजाग्रत, उसे ही भावनिद्रा कहा है। खुली आँखों से सोए वह भावनिद्रा और बंद आँखों से सोए वह द्रव्यनिद्रा। किसी व्यक्ति से मतभेद हुआ तो उसका कारण क्या है? तो कहें, भावनिद्रा।

प्रश्नकर्ता : इसका मतलब जागृति और मोक्ष एक ही है ?

दादाश्री : जागृति, वो ही केवलज्ञान है, वो ही मुक्ति है। दूसरा इसमें कोई फर्क नहीं है। मगर मोक्ष का परिणाम जागृति नहीं है, जागृति का परिणाम मोक्ष है। 'जागृति इज़ द मदर ऑफ मोक्ष!'

कुछ लोग मुझे कहते हैं कि, 'दादा मुझे मोक्ष नहीं चाहिए।' ऐसा टेढ़ा बोले तब उसे हम

कहते हैं कि, 'मोक्ष नहीं चाहिए, पर जागृति चाहिए न?' तब वह कहते हैं कि, 'हाँ। जागृति तो चाहिए ही, दादा!' उसे पूछें कि, 'जागृति तुझे पूरी करनी है न?' तब कहे, 'हाँ, पूरी करनी ही है।' इस तरह सीधी टिकिट देते हैं, मुफ्त देते हैं तो नहीं लेते और वो पैसे खर्च करके लेते हैं! अपने लोग ऐसे हैं, हिताहित का भान ही नहीं।

संपूर्ण जागृति ही मोक्ष है। निन्यानवे प्रतिशत जागृति हो जाए और एक प्रतिशत जोड़ दें तब सौ प्रतिशत पर केवलज्ञान होता है।

संपूर्ण जागृति ही केवलज्ञान है और केवलज्ञान खुद ही परमात्मा है और उस परमात्मा से हम खुद बातचीत करते हैं निरंतर। और आप हमारे साथ बैठे हो, फिर दुःख रहेगा किसी को? खुद परमात्मा कभी भी प्रकट नहीं होते, चौबीस तीर्थकरों के अलावा अन्य कहीं खुद परमात्मा प्रकट नहीं हुए हैं!

झोंका खाया, वह है नुकसान

आत्मानुभव अर्थात् क्या, कि ज्ञान मिलने से पहले जो अनुभव होते थे, उसके बदले ज्ञान मिलने के बाद नये प्रकार के अनुभव होते हैं और वे अनुभव धीरे-धीरे बढ़ते जाते हैं और जागृति बढ़ती है। संपूर्ण जागृति, वह संपूर्ण अनुभव है।

प्रश्नकर्ता : दादा से मिलने के बाद, ज्ञान मिलने के बाद अजाग्रत रहें तो कितनी जोखिमदारी है?

दादाश्री : जितने झोकें आते हैं उतनी। और यदि झोकें नहीं आएँ तो उतनी। देखे बगैर गया उसका जोखिम रहेगा। वह फिर से देखना पड़ेगा। देखोगे तो साफ हो जाएगा। देखने से हर एक उदय साफ हो जाता है। अगर उदय में तन्मयाकार रहे तो वे कर्म शुद्ध होने बाकी रहें और आत्मा

अलग होने के बाद फिर आत्मा की जागृति में रहा तो कोई हिसाब नहीं बंधता। जागृति मंद रहे उतने समय तक उसे वह चिपकेगा।

प्रश्नकर्ता : क्या चिपकेगा?

दादाश्री : चिपकेगा अर्थात् जो हिसाब उसे साफ करना है न, उतना साफ नहीं किया तो फिर वह वैसे का वैसे पड़ा रहेगा न!

प्रश्नकर्ता : वह साफ नहीं होगा, लेकिन नया नहीं बिगड़ेगा न?

दादाश्री : नये से लेना-देना ही नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : इन्हीं को शुद्ध करके भेजना है न!

दादाश्री : इन्हीं को शुद्ध करके भेजना है लेकिन वे नहीं भिजवाए इसलिए उतने अपने पास जमा रहेंगे।

विज्ञान का फल है 'जागृति'

प्रश्नकर्ता : यों सतत जागृति नहीं रहती, लेकिन समय आने पर ज्ञान हाज़िर हो जाता है।

दादाश्री : हाज़िर हो जाता है। जो हमेशा हाज़िर हो जाए, वही ज्ञान कहलाता है। जो हाज़िर नहीं हो, वह ज्ञान कहा ही कैसे जाएगा?

प्रश्नकर्ता : आप हमें, आत्मा और बाकी सब अलग कर देते हैं, फिर हमें आत्मा में ही रहना चाहिए न? फिर सारा मिक्स्चर क्यों हो जाता है?

दादाश्री : ऐसा है न, इस उपाधि (बाहर से आने वाला दुःख) को 'देखना' है, उपाधि में यदि तू हाथ डालेगा तो जल जाएगा। होली देखने से अपनी आँखें कहीं जल नहीं जातीं। लेकिन यदि उसमें से नारियल निकालने के लिए हाथ डालें तो जल जाएँगे। तू नारियल निकालने के लिए हाथ डाल रहा था, उससे यह हो गया। इसीलिए मैंने

कहा है कि, अब जब अगली बार ज्ञान दूँ तब समझदारी से संभालकर रखना।

प्रश्नकर्ता : लेकिन हम अलग (आत्मा-अनात्मा का जुदा होना) होने के बाद वापस नारियल लेने जाते हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए न?

दादाश्री : हाँ। ये चले जाते हैं यानी कि अभी तक आपकी जो जागृति है, उस जागृति को धक्का मारकर आप उसमें घुस जाते हो, क्योंकि कर्म के उदय भारी हैं। यानी इंसान कब तक यह झेल सकेगा? उँगली पर यदि नल का पानी गिर रहा हो तो कब तक ऐसे उँगली रख सकेगा? तो कहते हैं, 'आधा इंच या पौन इंच हो, तब तक, लेकिन यदि दो इंच का फोर्स आए तो उँगली खिसक जाती है। उसी तरह ये कर्म के उदय इतने भारी हैं न कि जागृति खिसक जाती है। कॉलेज से डिग्री लेने में कितने साल लगे थे?

प्रश्नकर्ता : छः।

दादाश्री : मुझे इतने सालों की जरूरत नहीं है। मैं तो कहता हूँ कि छः ही महीने आप मेरे साथ रहोगे न, तो बहुत हो गया! अनंत जन्मों के पूरे नुकसान की सारी भरपाई हो जाएगी।

यह मार्ग इतना कल्याणकारी है। वर्ना ऐसा है कि करोड़ों जन्मों तक भी मोक्ष प्राप्त नहीं किया जा सकता। और आपको तो फिर चेतावनी देता है कि 'यह गलत हो रहा है'। वह मोक्ष में ले जाने के प्रयत्न करता है। और भीतर जो जागृति है, वही आत्मा है, आत्मा और कुछ भी नहीं है। जो आपको जाग्रत करे, भीतर वैसी जागृति उत्पन्न हो गई, वह सब से बड़ा आश्चर्य है।

जागृति उत्पन्न होने के लिए ही विज्ञान है। विज्ञान का फल क्या? जागृति। खुद अपनी ही जागृति। जागृति को टॉप पर ले जाना ही अपना धर्म है। उसी को शुद्ध उपयोग कहते हैं।

जय सच्चिदानंद

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में सत्संग कार्यक्रम

अमरावती

14-15 अक्टूबर (शुक्र-शनि), शाम 6 से 9 - सत्संग और 16 अक्टूबर (रवि), शाम 5 से 8-30 - ज्ञानविधि
स्थल : संत ज्ञानेश्वर सांस्कृतिक भवन, मोर्शी रोड, अमरावती. संपर्क : 7507004403

17 अक्टूबर (सोम), शाम 6 से 9 - आप्तपुत्र सत्संग

स्थल : सिद्धार्थ मंगलम, दशेरा मेदान के सामने, अमरावती. संपर्क : 7507004403

अडालज

24 अक्टूबर

दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति

26 अक्टूबर

नूतन वर्ष (वि. सं. 2079) पर विशेष कार्यक्रम

महेसाणा

परम पूज्य दादा भगवान का 115वाँ जन्मजयंती महोत्सव - 3 से 7 नवम्बर

3 से 6 नवम्बर - सत्संग, 6 नवम्बर - ज्ञानविधि, 7 नवम्बर - जन्मजयंती दिवस

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, राजकोट : 9924343478, भूज : 9924345588, मुंबई : 9323528901, अंजार : 9924346622, मोरबी : 9924341188, सुरेन्द्रनगर : 9737048322, अमरेली : 9924344460, वडोदरा : 9574001557, गोधरा : 9723707738, जामनगर : 9924343687. अन्य सेन्ट्रों के संपर्क : अहमदाबाद (दादा दर्शन) : 9574001445, वडोदरा (दादा मंदिर) : 9924343335, दिल्ली : 9810098564, बैंगलूर : 9590979099, कोलकता : 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-3232, यु.के.: +44 330-111-3232, ऑस्ट्रेलिया: +61 402179706

शिकागो : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 17 से 19 जुलाई 2022



टोरन्टो : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 20 से 25 जुलाई 2022



अडालज : कोर्डीनेटर शिविर : ता. 5 से 7 अगस्त 2022



सितम्बर 2022
वर्ष-17 अंक-11
अखंड क्रमांक - 203

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
LPWP Licence No. PMG/NG/036/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

ज्ञानी के सानिध्य से खिलती है जागृति

यह आपको जागृति है लेकिन खिली नहीं है। इसलिए हम इस तरह बातें करते रहते हैं ताकि खिले। इस साइड की खिलती है, उस साइड की खिलती है। इस कोर्नर की खिलती है, उस कोर्नर की खिलती है। यानी जागृति पूरी तरह से खिलती है। इसलिए हम बातें करते हैं, करने को नहीं कहते। हमारे पास बैठे रहने से यह जागृति बढ़ती है। इसलिए लोग रोज आते रहते हैं न! वर्ना एक ही दिन में नहीं कर दूँ? अच्छे काल में तो एक ही बार बात करनी होती थी। ये तो कितनी अधिक उधारी वाले! हाँ, अत्यंत उधारी वाले। दिवालिया सीट पर बैठे हुए हैं। रोज-रोज विधि करता हूँ फिर भी उधार खत्म नहीं होता। लेकिन फिर भी ऐसे करते-करते खत्म हो जाएगा।

- दादाश्री



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation -
Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.